|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 30. März 2025 | | |
| **4. Fastensonntag C Laetare** | | |
| Erste Lesung: Jos 5,9a.10-12; Zweite Lesung: 2 Kor 5,17-21; Evangelium: Lk 15,1-3.11-32 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 145, 1+3! | Wohin soll ich mich wenden |
|  | GL 271, 1-4! | O Herr, aus tiefer Klage |
|  | GL 427, 1 | Herr, deine Güt ist unbegrenzt |
|  | GL 744 | Herr, Gott, vor den wir treten |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 151 | Herr, erbarme dich |
|  | GL 161 | Du rufst uns, Herr |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 34,2-7 |  |
|  | Kehrvers: GL 39,1 oder | Kostet und seht: Gut ist der Herr |
|  | Kehrvers: GL 43,1 | Gott hat dich gesegnet auf ewig |
|  | oder |  |
|  | GL 268, 4+5 | Herr, nimm von mir nicht deinen Geist |
|  |  |  |
| Ruf v. d. Evangelium: | Ruf: GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 | |
|  |  | |
|  | *Ich will zu meinem Vater gehen und ihm sagen:* | |
|  | *Vater, ich habe mich versündigt gegen den Himmel und gegen dich.* | |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Credo: | Sprechen |  |
|  | GL 456 | Herr, du bist mein Leben |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 266, 1+7! | Bekehre uns, vergib die Sünde |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 198 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 281, 2 | Seht, wie ich, der Herr, euch liebe |
|  | GL 366, 1-3 | Jesus Christus, guter Hirte |
|  | GL 484, 1+2 | Dank sei dir, Vater |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 384, 1-3 | Hoch sei gepriesen |
|  | GL 746, 1+3+6 | Dich liebt, o Gott, mein ganzes Herz |